रिकॉर्ड :– तकदीर जगाकर आई हूँ.... ॐ पिताश्री 26/5/63
ओम् शान्ति। ये है डेड साइलेंस। अशरीरी हो। इसको कहा जाता है सच्ची शांति। ये प्रैक्टिस बच्चों को हो जाए। स्व आत्मा के धर्म में टिक जाए अथवा अशरीरी हो जाए शरीर होते हुए भी। जैसे अपन इस पुरानी दुनिया में रहते याद नई दुनिया को करते हैं। बुद्धियोग वहाँ लगा हुआ है। आत्मा का तो स्वधर्म ही साइलेंस है। इस पर एक मिसाल भी देते हैं कि हार गले में पड़ा था, ढूँढ़ते बाहर थे। ये एक दृष्टांत यहाँ का है। सन्यासियों ने कॉपी किया है; जैसे क्रिश्चियन लोग भी क्राइस्ट से कृष्ण की कॉपी करते हैं। कहते हैं– कुमारी के गर्भ से पैदा हुआ। अब ऐसे तो है नहीं कि कृष्ण कोई कली से पैदा हुआ है जो उन्होंने कॉपी किया है। तो बाप समझाते हैं, तुम्हारा स्वधर्म है शांति। इस शांति में रहने से सन्नाटा हो जाता है। अगर सब महारथी, जिनका अभ्यास पक्का हो, सब इस संगठन में शांत हों, तो सन्नाटा हो जाए। यहाँ बैठने से देह–अभिमान उड़ जाता है, सन्नाटा हो जाता है। जैसे आम मनुष्य शरीर छोड़ते हैं अथवा कोई योगी शरीर छोड़ते हैं तो सन्नाटा हो जाता है। तुम हो राजयोगी और वो है हठयोगी। वो भी ऐसे समझते हैं, हम शरीर छोड़ परमधाम में जाते हैं। ..... ब्रह्म में लीन हो जाते हैं। इस समय अगर कोई अनुभवी हो तो ..... कि सन्नाटा हो गया है। ऐसे नहीं, वो सन्यासी कोई कम है। पवित्र बनते हैं फिर उनपर कोई थोड़े ही कहते कि दुनिया कैसे चलेगी। ड्रामा अनुसार इन्हों का हठयोग भी नूँधा हुआ है। तुम्हारा है राजयोग। तुम जानते हो, हम भविष्य पढ़ रहे हैं 21 जन्मों लिए राजाओं का राजा बनने। 21 पीढ़ी गाई हुई है ना। ये भारत की ही बात है। और कहाँ भी .....जो अनन्य बच्चे हैं उन्हों को ये नशा रहता है। गॉडली स्टूडेंट लाइफ तो है ना। भगवानुवाच्य कहते हैं, मैं तुमको राजयोग सिखलाता हूँ, जिससे तुम 21 जन्म स्वर्ग के मालिक बनोगे। स्टूडेंट्स भी जानते हैं कि बरोबर हम बेहद के बाप से स्वर्ग की बादशाही का वर्सा ले रहे हैं। ऐसी पढ़ाई ड्रामा में एक ही बारी संगमयुग पर होती है। फिर 21 जन्म प्रालब्ध मिल जाती है। यहाँ है अल्पकाल के लिए मर्तबा। कोई प्रेसिडेंट आदि बनते हैं, उन्हों की 5–10 वर्ष ड्युटी रहती है। फिर इनको बदली कर देते हैं। आज रुपये जितना मान है, कल पाई जितना बनाय देते हैं। कोई को तो खतम भी कर देते हैं। ये है अल्पकाल का सुख। फिर भी देखो, नेहरू क्या था, अब क्या है। चलते–2 कोई दुश्मन मार डाले। डर तो रहता है ना। कोई–2 को सारी लाइफ लिए भी चुन लेते हैं; परन्तु कोई भी समय कुछ हुआ, दुश्मन निकला, मार डाला। तुम हो गुप्त। तुम जानते हो, हम भविष्य के लिए इस जन्म में पुरुषार्थ कर रहे हैं और सभी मर्तबा इसी जन्म में ही पाते हैं। तुम्हारा ये पुरुषार्थ अंत तक चलता है, जब तक शरीर भी छोड़ो। प्रालब्ध भविष्य में मिलनी है। ये नई दुनिया अथवा नए स्वराज्य लिए नई बातें हैं। आत्मा जानती है कि हम भविष्य में नया चोला पहन राज्य करेंगे। आत्मा बोलती है, हम आत्मा इस पुराने शरीर में परमपिता परमात्मा से राजयोग सीख रहे हैं, जिससे हम भविष्य में प्रिंस–प्रिंसेज, डबल सिरताज बनेंगे। भारत में देवी–देवताएँ ही डबल सिरताज थे। लाइट का ताज और रत्नजड़ित का ताज, दोनों ही थे। इसी ही भारत में जब वो पूज्य फिर पुजारी बनते हैं तो फिर लाइट का ताज नहीं रहता है; क्योंकि विकारी बन जाते हैं। ये ज्ञान सिर्फ तुम बच्चों के ही बुद्धि में है। तुम जानते हो, हम ये शरीर छोड़ जाए प्रिंस बनेंगी, फिर डबल सिरताज बनेंगी। ये है एम–ऑब्जेक्ट। इसलिए वो चित्र बनाना चाहिए। हर एक

अपना चित्र बनावे तपस्या और राजाई का। अपने घर में चित्र को देखेंगे तो खुशी भी होगी और याद भी रहेगी। दिलवाला मंदिर में भी वे ही यादगार है ना। नीचे तपस्या में बैठे हुए हैं और ऊपर में है वैकुण्ठ। तो ये चित्र रहने से याद रहेगा कि हम सो राजाओं के राजा बन रहे हैं। परमपिता परमात्मा से हम वर्सा लेते हैं, ब्र०वि०शं० से नहीं। हम बाप से डायरैक्ट लेते हैं। ब्र०वि०शं० को सूक्ष्मवतनवासी ब्रदर्स कहेंगे। यहाँ भी हम आत्माएँ एक बाप के बच्चे भाई–2 हैं। फिर शरीर में आने से भाई–बहन हो जाते हैं। ऐसे नहीं कि चीनी–हिन्दू भाई–2 हैं, आपस में मिल जाएँगे। हर एक का धर्म, रसम–रिवाज़ अलग–2 है। एक तो बन नहीं सकते। भाई–2 तो सिर्फ आत्मा के रूप में है। वो लोग तो जिस्मानी रूप में ले लेते हैं। अभी तुम जानती हो कि ये मनुष्य सृष्टि का चक्कर फिरता ही रहता है। मनुष्य को ही 84 जन्म मिलते हैं, ब्र०वि०शं० को नहीं। वो तो बाबा ने समझाया है, जब सृष्टि खलास होगी तो पहले शिवबाबा जाएँगे। फिर ब्र०वि०शं० जाएँगे। फिर इस सृष्टि पर देवताओं की सोल्स आवेंगी। बाबा समझाते हैं कि भल इस एक जन्म में अल्पकाल के लिए बड़ा भारी पद मिल सकता है; परन्तु उनको काग विष्ठा समान सुख कहा जाता है; क्योंकि उनमें दुख है, बहुत हैरान है। यहाँ तुमको कोई तकलीफ की बात नहीं। तुम परमपिता परमात्मा के शरण में आ गई हो। माया से विदाई ले आए हो। जैसे ईस्ट जर्मनी–वेस्ट जर्मनी में जाए एसलम अथवा शरण लेते हैं वैसे तुमने एसलम अथवा शरण ली है ईश्वर की। रावण को छोड़ राम की एसलम में आए हो। राम शरण में लेकर फिर गुल–2 बनाते हैं, राज्ययोग सिखलाते हैं। कितनी भारी कमाई है। यह है सच्ची कमाई, बाकी तो सभी कमाइयाँ मिट्टी में मिल खाक हो जावेगी। जो बहुत साहुकार है वो भी सभी खलास हो जावेंगे। तुम्हारे पास तो देखो कुछ न है। शरीर भी दे दिया। आत्मा नंगी आई, फिर मात–पिता आदि संबंध जुटा। अब फिर तुम शरीर छोड़ वापिस जाने वाले हो मच्छरों सदृश। रुद्र शिव की माला कितनी बड़ी है। 3½ सौ करोड़ की है। उनको आत्माओं का प्रजापिता न कहेंगे। वो है आत्माओं का पिता। प्रजा मनुष्यों की होती है। तो रुद्र की माला कितनी बड़ी है। यह ज्ञान भगवान बिगर कोई भी दे नहीं सकते। नॉलेजफुल, ब्लिसफुल वो बाप है। वो आकर मुक्ति–जीवनमुक्ति का रास्ता बतलाते हैं। इसको ही आशीर्वाद कहेंगे। अभी तो सारी दुनिया का प्रश्न है ना; क्योंकि सारी दुनिया पतित, अशांत है। सतयुग में बिल्कुल ही शांत है। कोई झगड़ा नहीं– न घर में, न नेशन में। यहाँ तो देखो, मारामारी लगी पड़ी है। घर में भी शांति नहीं। कोई बिरला घर होगा जहाँ शांति हो। यह है ही पतित दुनिया, दुखधाम। सुखधाम को स्वर्ग, दुखधाम को नर्क कहा जाता है। मनुष्यों को यह पता नहीं पड़ता है कि हम रौरव नर्क में बड़े दुखी हैं। खटमल मुआफिक एक/दो का खून चूसते रहते हैं। मनुष्य बिचारे मेहनत कर कमाते, उस पर टैक्स लगाकर 75% तो गवर्मेन्ट ले लेती है। क्या यह सुख की दुनिया है? बाप आकर फिर स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। श्रीमत से ही तुम श्रेष्ठ होंगे। श्रीमत भगवत गीता है ना। वो गीता कोई श्रीमत की नहीं है। बाप कहते हैं– बच्चे, मैं जो यह ज्ञान दे रहा हूँ तुमको राजाओं का राजा बनाने का, वो कोई परम्परा नहीं चलता। सतयुग में कोई पतित है नहीं, जिनको ज्ञान मिले। वहाँ प्रालब्ध वाले। यह ज्ञान लोप हो गया फिर गीता का ज्ञान आया कहाँ से? पीछे तो मनुष्यों ने बैठ गीता बनाई। पहले–2 तो मेरा नाम निकाल, जिसने मेरे से राज्य भाग्य लिया उनका नाम डाल दिया। शिव के बदली कृष्ण का नाम दे दिया। शिवबाबा से हम ज्ञान सीख रहे हैं, फिर हम सतयुग में कृष्ण बनते हैं। तो संगम होने कारण बातों को मिला दिया है। तो गीता खण्डन हो गई ना। गीता खण्डन होने से सभी शास्त्र खण्डन हो जाते। शूद्र के संतान भी शूद्र होंगे ना। तो और सभी शास्त्र हैं गीता के बाल–बच्चे। तो गीता झूठी होने से सभी शास्त्र झूठे हो गए। 95% खण्डन की हुई है; जैसे आटे में लूण। जो कहते हैं, वो ज़रूर जानते हैं ना कि इनमें कितना सच, कितना झूठ है। समझा भी सकते होंगे ना। टीचर ज़रूर जानते हैं तब तो क्लास में प्रश्न पूछते हैं। हम कहते हैं, 95% गीता झूठी है। तो सिद्ध कर बतलाते भी हैं, नहीं तो बहस

हो जाए कि यह डिफेम करते हैं। वो कहते हैं, इन्होंने गीता को डिफेम किया है। हम कहते, मनुष्यों ने गीता को डिफेम किया है। उन पर केस होना चाहिए; परन्तु केस किस पर करें। गवर्मेन्ट है इरिलीजस। धर्म को न मानने वाली। इरिलीजस अन लॉफुल इनसॉलवेंट है। सतयुग में रिलीजन देवी–देवताएँ तो गवर्मेन्ट भी राइटियस लॉफुल है। लॉ आर्डर रहता है। यहाँ तो लॉ आर्डर है नहीं। वहाँ सालवेंट सॉवरंटी है। कितना फर्क है! तो बाप से ऐसा वर्सा लेना चाहिए ना! सो लेंगे तब जब बाप को पहचाने। देखो, खाँसी भी कर्मभोग है ना। सतयुग में रोग का नाम–निशान नहीं रहता। एवर हेल्दी बन जाते हैं 21 जन्मों लिए। एवर हेल्दी, एवर वेल्दी 21 जन्मों लिए बनते हैं। भक्तिमार्ग भी शुरू होता है तो वहाँ भी इतने वेल्दी हैं जो सोमनाथ का कितना बड़ा मंदिर बनाते हैं। तो उन्हों के घर कितने बड़े–2 आलीशान होंगे। सतयुग–त्रेता के बाद मंदिर बनाने शुरू करते हैं। कितनी मिल्कियत रहती है। एवर हेल्दी, निरोगी काया रहती है। भारत की आयु, एवरेज 150 बरस थी। अभी तो 30 बरस की है; क्योंकि वो योगी थे। अभी तो भोगी है ना। कृष्ण को भी योगेश्वर कहते हैं, तो पहले–2 जब कोई आते हैं तो उनको समझाना है, अपने बाप को जानो। बाप को न जानने कारण ही सभी ऑरफन बन आपस में लड़ते रहते हैं। सन्यासी भी लड़ते हैं। कुंभ के मेले पर बड़ी लड़ाई लगी थी कि पहली सवारी किसकी निकले। फिर तो मिलेट्री भी आ गई। कितने मर गए। र(क्त) की नदी बहने लगी। तो यह भी क्रोध का भूत है ना! यहाँ तो 5 विकारों पर जीत पानी है। सो भी सिवाए योगबल के पाए न सके। बाप को भूला और लगा माया का गोला। बाबा ने समझाया है, जां जीना है, पढ़ना है, बाप को याद करना है। उस एज्युकेशन में ऐसे नहीं कहा जाता कि जां जीना है, सीखना है। यहाँ कहा जाता है– अंत तक हमको पढ़ना ही है। फिर तुम जाकर प्रिंस बनेंगे। गोल्डन स्पून इन माउथ। कृष्ण को रत्नजड़ित मुरली दिखाते हैं। आपस में खेलते–करते हैं। बाकी ऐसे नहीं, मुरली बजाते हैं। मुरली तो है वास्तव में ज्ञान.....एज्युकेशन, जो बाप पढ़ाते हैं। बाप मोस्ट ओबीडियेंट सर्वेंट हैं। कहते हैं– मेरे मोस्ट बिलवेड चिल्ड्रेन्स, तुम सिकीलधे हो ना। इसका अर्थ भी समझाते हैं– बच्चे, तुमने ही कल्प पहले वर्सा लिया था, फिर से लेने आए हो। आई एम मोस्ट ओबीडियेंट फादर, टीचर, प्रिसेप्टर। मेरा कोई भी बाप, टीचर, गुरु न है। यह बड़ी समझने की बातें हैं। और क्या निश्चय करावें! अच्छा, जिनको निश्चय हुआ है उन पास जाओ। सन शोज़ फादर, फादर शोज़ सन। बच्चे बतला सकते हैं, कैसे हमारा बाप, टीचर, गुरु वो प० है। तुम बच्चे जानते हो, बेहद के बाप से बेहद का सुख का वर्सा हम ले रहे हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। नेहरू को तो अल्प काल के लिए सुख है। आजकल तो सभी को गोली मारते रहते हैं। सतयुग में ऐसी बातें नहीं होतीं। यहाँ कितना दुख है। अकाले मर जाते हैं। रोने–पीटने का हशर है। स्वर्ग के कितने आपार सुख हैं। तो ऐसा सुख पाने लिए पुरुषार्थ करना पड़े। सभी को तो एक जैसा वर्सा नहीं मिलेगा। नम्बरवार पास होते हैं। कोई चलते–2 फेल भी हो जाते हैं। भागन्ति हो जाते हैं तो समझते हैं फेल हो गया। बाप अथवा साजन की सजनी बन फिर छोड़ देते। कहते भी हैं, मैं तेरी हूँ फिर फारकती दे देते। तो कमबख्त हुआ ना। बख्तावर भी यहाँ बनते हैं, तो कमबख्त भी यहाँ बनते हैं। गीत में है ना– तकदीर जगाकर आई हूँ। स्कूल में तकदीर जगाए बैठते हैं। फिर कोई तो ऊँच पद पाए लेते हैं, कोई कम। यहाँ भी तुम कहते हो, हम नर से ना० बनने आए हैं। सो भी 21 जन्म लिए तकदीर तो बनी, फिर देखना है सूर्यवंशी में आवेंगे वा चंद्रवंशी में। बाप का तो बना, फिर हम कितना पद ऊँच लेंगे। बच्चे कहेंगे, हम माँ–बा(प) के तख्त पर जीत पहने, आगे नम्बर में आवें। लास्ट नम्बर में आने वाले को पुरुषार्थी न कहेंगे। उत्तम–मध्यम–कनिष्ठ होते हैं ना। कनिष्ठ तो नापास ही होंगे। पुरुषार्थ करना चाहिए बाप से पूरा वर्सा लेने का। अच्छा, ॐ